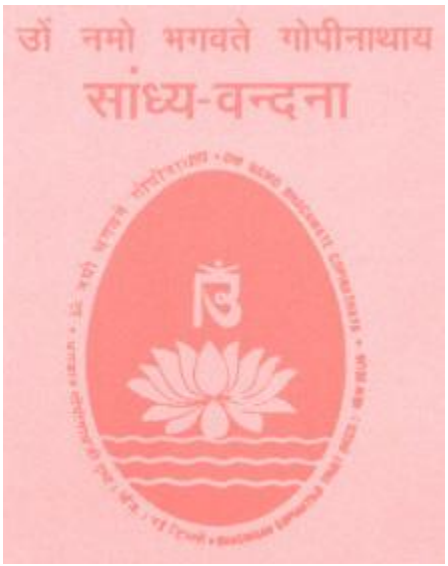

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

उों श्री गणेशाय नमो नमः

१. उों शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं घ्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

२. अभिप्रेतार्थ-सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर् अपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।

३. गुरुर् ब्रह्मा गुरुर् विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः।
गुरुर् एव जगत् स्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

४. अखण्ड-मण्डलाकरं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

५. अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया।
चक्षुर् उन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

६. नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिव-रुपिणम्।
शिरसा योग-पीठस्थं धर्म-कामार्थ-सिद्धये।।

1

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

श्री गुरु स्तुतिः

ओं

१. नारायणात्मजं शान्तं हारमाल्योदरोद्भवम्।
भक्तानां रक्षकं धीरं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

२. ब्राह्मणं ब्रह्म-तत्त्वज्ञं जन-सन्मार्ग-दर्शकम्।
निष्काम-कर्मिणं सन्तं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

३. अहर् निशं भक्ति-योग प्राप्त-शंकर-दर्शनम्।
अजपाजप-संलग्नं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

४. जितेन्द्रियं जिताहारं सम-लोष्ठाश्म-कांचनम्।
मायातीतं महात्मानं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

५. देह-स्नान-विनिर्मुक्तं मनः-स्नान-परायणम्।
सदात्मशुद्धि-संयुक्तं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

६. ईश-कृपाप्त-विज्ञानं-अष्टसिद्ध्यनुगं-मुनिम्।
भक्त-दत्त-नव-निधिं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

७. गृहस्थं-अपि संन्यास-व्रतिनं ब्रह्मचारिणम्।
त्रिकालज्ञं गुणातीतं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

८. सिद्धासन-स्थितं नित्यं प्रभुध्यान-रतं बुधम्।
परमेश्वर-संलीनं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

६. ज्ञान-गंगा-जल स्नान-धौत-मानस-किल्विषम्।
विज्ञानिनां अग्रगण्यं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

१०. स्व-कर-स्पर्श-सद्भक्त-भव-भीति-विनाशकम्।
सर्व-जन-हिते-रतं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

११. दृष्टि-पातेन दुःखिनां रक्षितारं कृपा-निधिम्।
दुःखिभ्यः सुख-दातारं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

१२. यज्ञ-भस्म-भक्त रोग-हर्तारं शुद्ध-चेतसम्।
रोग-नाश करं वैद्यं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

१३. देश-सकंट-काले यः कृतवान् लोक-रक्षणम्।
तं देश-रक्षकं वीरं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

१४. राक्षसानां विनाशाय सैनिकाः येन प्रेरिताः।
सेनाध्व-दर्शकं शूरं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

१५. पवित्रे स्वाश्रमे संस्थं भक्तानां काम-पूरकम।
अवधूत-दशापन्नं गोपीनाथं नमाम्यहम्।।

१६. काव्य-पुष्पमयी पूजा श्रीगोपीनाथस्य पादयोः।
कृता त्रिभुवानाख्येन शास्त्रिणा कृष्ण-सूनना।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बबॅ भगवान हरे

१. उों बबॅ भगवानॅ हरे, जय जय बबॅ भगवानॅ हरे;
पिता, बबॅ भगवानॅ हरे।
भक्ति-भाव भक्त्यन पनॅन्यन, दासॅ-भाव दासन पनॅन्यन;
प्रथ विज़ि कर सों अनुग्रह, जय जय बबॅ भगवानॅ हरे।।

२. कीर्तन युस सों करि पज़ि मनॅ, छ्यनॅ गछ़ि मोहॅ-ज़ालॅ निश;
बबा, छ्यनॅ गछ़ि मोहॅ ज़ालॅ निश।
क्षनॅसॅय मंज़ मूख्य सुय बनि, क्षनॅसॅय मंज़ मूख्य सुय बनि
नाव तुहन्दुय युस स्वरे।। जय जय ०

३. मोल मॉज्य सोनुय छुवुँ सों तोह्य, आयॅ अस्य त्वहि शरॅणॅय
बबा, आयॅ अॅस्य त्वहि शरॅणॅय।
परॅनॅय पनॅन्यन तल रछ, पादन पनॅन्यन तल रछ;
असि संकटॅ नि गरे।। जय जय ०

४. आवागमन च़ठ सों सोनुय, तुहन्दुय छु मनि मंज़ लोल;
बबा, तुहन्दुय छु मनि मंज़ लोल।
होल गोमुत छु असि सद्ग्वरॅ, होल गोमुत छु असि टाठि ग्वरॅ;
तुहुन्द दूर्यर कुस ज़रे ? जय जय ०

५. पूरॅ यूगॅच सुमरण फिरान, नूरॅ-बोरमुत छु नुन्दॅ बोन;
बबा, नूरॅ-बोरॅमुत छु नुन्दॅ बोन।
सूर तुहुन्ज़ि दोनि हुन्द छु औषध, सूर तुहुन्ज़ि दोनि हुन्द छु औषध;
बनि यस मा सु मरे।। जय जय ०

६. सासॅ सिरियुक ह्युह छुवु बजर, आसॅवुन्य अजर अमर तो'ह्य;
बबा, आसॅवुन अजर अमर तो'ह्य।
भास मनि मंज़ प्रत्यक्ष असि वोञ, भास मनि मंज़ प्रत्यक्ष असि वोञ;
पोश लागोय लोलरे।। जय जय ०

७. यस दया आसि तुहुन्ज़य बबा, पोरि कति तस यमॅदूत ?
बबा, पोरि कति तस यमॅदूत ?
भूत, प्रीत, तसॅरुफ इत्यादिक, भूत, प्रीत, तसॅरुफ इत्यादिक;
सॉरिय गछ़न बांबरे।। जय जय ०

4

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

८. रोज़ि अमर सुति बेशक, यस कल्याण बनि तुहुन्दुय;
बबा, यस कल्याण बनि तुहुन्दुय।
तुहुन्दि प्रभावॅ तस ब्रोंठॅ कनि, तुहुन्दि प्रतापॅ तस ब्रोंठॅ कनि;
वुछॅतॅ, अदॅ कांह मा दरे।। जय जय ०

९. पाप-शाप असि पॉपियन गाल, वाल पृथ्वी प्यठॅ बोर;
बबा, वाल पृथ्वी प्यठॅ बोर।
मॉर्य संसारॅक्यव व्यशियव, मॉर्य संसारॅक्यव व्यशियव;
ह्रदयस मंज़ असि बेह।। जय जय ०

१०. शूलहरॅ, यूगीश्वरॅ, सन्तॅ, सोन भविनय सॉ जय-जयकार;
बबा, सोन भविनय सॉ जय-जयकार।
वीलॅ-ज़ॉरी बोज़ सन्मोंख, वीलॅ-जॉरी बोज़ सन्मोंख;
रोज़ सन्त्वष्ट गरि गरे।। जय जय ०

११. गोपीनाथ-आश्रम तुहुन्द, वैखुरीयारॅ शोलॅ मारान;
बबा, वैखुरीयारॅ शोलॅ मारान।
प्रारान भखॅत्य दर्शनस ॲस्य, प्रारान भखॅत्य दर्शनस; अस्य
बब हा पादन तल वरे।। जय जय ०

१२. दीवानॅ मसरुर दासव, मंज़ॅ दासा अख तुहुन्द;
बबा, बुॅति दासा अख तुहुन्द।
मोन भवॅसरॅ तरि सुय युस, मोन भवॅसरॅ तरि सुय, युस
आरती तुहुन्ज़ न्यथ करे।। जय जय ०

१३. बबॅ भगॅवानॅ हरे, जय जय बबॅ भगॅवानॅ हरे;
पिता, बबॅ भगॅवानॅ हरे।
भक्ति-भाव भखॅत्यन पनॅन्यन, दासॅ-भाव दासन पनॅन्यन;
प्रथ विज़ि कर सॉ अनुग्रह, जय जय बबॅ भगॅवानॅ हरे।।

----------:----------

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

शान्ति-पाठ

असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर् गमय।
मृत्योर् मा अमृतं गमय।

ओं पूर्णम् अदः, पूर्णम् इदं, पूर्णात् पूर्णम उदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णम् आदाय, पूर्णम् एवावशिष्यते।।

ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः

२ मिनट के लिए भगवान जी के ध्यान में मौन
तथा भगवान जी के नाम का जाप

ओं ओं ओं

ओं नमो भगवते गोपीनाथाय,
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय,
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय,

भावॅ सान लोला

१. भावॅ सान लोला भरव सद्-ग्वरॅसॅय,
भगवान बबॅसॅय करव प्रणाम।
भावॅ सान लोला भरव सद्-ग्वरॅसय,
भगवान बबसॅय करव प्रणाम।।

२. ज़न्मा दोर तम्य हारॅ जूनॅ-पछिसॅय,
त्यथ ऑस बाह ब्ययि भार्गववार।
1898 ईस्वी सनॅ-सॅय,
भगवान बबॅसॅय करव प्रणाम।।

३. हारॅमाल माता आयि वोलॅसनॅसॅय,
नाराण-बबॅनॅय बोर क्याह लोल।
मान तॅम्य कॅरॅनय सूॅत्य सिद्धार्थसॅय,
भगवान बबॅसय करव प्रणाम।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

४. बालॅक्रीड़ा कॅरॅन मंज़ भानॅमहलॅसॅय,
घरॅसॅय मंज़ तस ओस वैराग।
त्यॉगिथ सोरुय छ़ाँडॉन शिवॅसॅय,
तस त्यागॅ-शीलसॅय कॅरव प्रणाम।।

५. जायि जायि छाँडान ओस सद्-ग्वरॅसॅय,
कर दियम दर्शुन ? बन्यम अनुग्रह।
अभिलाष पूरॅ गव तस साधु-शीलॅसॅय,
तस निष्कामॅसॅय करव प्रणाम।।

६. साफा बबस ओस प्यठ मस्तकॅसॅय,
तनि प्यठ फ्यरॅना ओस शूभान।
सोऽहं सोऽहं बबस ओस मनॅसॅय,
तस स्थिॅर-मनॅसॅय करव प्रणाम।।

७. दोहन तें रॉच़न लॅगिथ वोपॅवासॅसॅय,
केवल चिलिमा ऑस ज़ोतान।
ॐ-शब्दॅं-मोहॅरा बबस प्ययि मनॅसॅय,
तस अवधूतॅसॅय करव प्रणाम।।

८. श्वद्वॅं-मनॅं भक्ति-भावॅं लगान यज्ञॅसॅय,
धून्या ब्रोंठॅकनि शोलॅं मारान।
दिवॅंताह ति प्रारान हवनॅं-बॉग्यसॅय,
तस यागॅ-शीलॅसॅय करव प्रणाम।।

९. आव येलि संकठ कश्यपॅं-प्रान्तॅसॅय,
योगअग्नि सूॅत्यन तथ कोरुन ग्रास।
अद्वैत ऑसिथ लॅगिथ कर्म-योगॅसॅय,
योगाभ्यॉसिसॅय करव प्रणाम।।

१०. खबरा न्यबर गयि कश्मीर-प्रान्तॅसॅय,
गोपी - भगवान गयॅं न्यर्वाण।
न्यर्लूभ, निष्काम, सायंकालॅसॅय;
ध्यानीश्वरॅसॅय करव प्रणाम।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

११. ज़्येठॅ द्वयि भोमॅवारि जूनयपछिसॅय,
मृगशर निछतुर ओस चमॅकान।
1968 ईस्वी सनॅसॅय,
निर्वाण-शीलसॅय करव प्रणाम।।

१२. भखॅत्य आय लारान तोत दर्शनॅसॅय,
अशि कनि मोख्तय आस्य हारान।
आरती लोलॅ सान कॅरॅख यूगीश्वरॅसॅय,
ब्रह्म-स्वरुपसॅय करव प्रणाम।।

१३. क्याह करन कर्म तस कर्मातीतसॅय,
हृदयस मंज़ यस ओस सोऽहम?
जूत्य गॉयि मीलिथ ज्योति-स्वरुपॅसॅय,
जीवनम्वक्तॅसॅयि करव प्रणाम।।

१४. कति आस्य धनॅ तॅ द्यार तस निर्लोभसॅयि?
लक्ष्मी ब्रोंठॅकनि करान तस वास।
कर कर्यम कृपा दियम म्य दानॅसुॅय,
तस दानॅशीलसॅय करव प्रणाम।।

१५. पीठा वुञक्यनस तस पीठीश्वरॅसॅय,
वैखुरी - यारय क्याह शूबान।
कृपा बबॅसॅन्ज़ विश्व-मंडलॅसॅय,
भगवत्रुपसॅय करव प्रणाम।।

१६. वर्णन क्याह करव तस गुणातीतसॅय?
युस ओस न्यर्लोभ ब्ययि न्यर्गुण।
नमो नमः बबॅसॅन्दिस गुप्तय तपॅसॅय,
कर्मातीतसॅय करव प्रणाम।।

१७. ग्वरॅ सॅन्ज़ अस्तुती स्वरि युस मनॅसॅय,
तस कति पोरिय कॉंसि हुन्द भय ?
केंह न सॉ तॉर छय तस म्वकॅलनॅसॅय,
भगवान बबॅ सॅय करव प्रणाम।।
भावॅ सान लोला भरव सद्ग्वरॅसॅय,
भगवान बबॅसॅय करव प्रणाम।।

8

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

गुरु वन्दना

१. जय दक्षिणा-मूर्ति, ओं गुरु जय दक्षिणा-मूर्ति।
करत अनुग्रह शिष्यवर्ग पर, करत अनुग्रह दासवर्ग पर;
फैली जग कीर्ति।। हरि ओं जय दक्षिणामूर्ति।

२. दृष्टिपात, संकल्प-मात्र से, जगती कुण्डलिनी,
स्वामी, जगती कुण्डलिनी।
क्रियावती क्रीडाएँ करती, क्रियावती क्रीडाएँ करती;
जायें न जो बरनी।। हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति।

३. षट्चक्रों को बेध, उर्ध्व-गति प्राणों की होती,
स्वामी, प्राणों की होती।
दिव्य-मौन उपदेश जगाता, दिव्य मौन उपदेश जगाता;
निष्ठा की ज्योति।। हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति।

४. निर्मल मन, निष्काम-भाव से शक्ति को ध्यावे;
स्वामी शक्ति को ध्यावे।
बह्मधाम कर प्राप्त, बह्मधाम कर प्राप्त;
छूट भव-बन्धन से जावे।। हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति।

५. करिये कृपा गुरुदेव दास को अटल-भक्ति दीजे,
स्वामी, अटल भक्ति दीजे।
भुक्ति-मुक्ति कर दान दीन को, भुक्ति-मुक्ति कर दान दीन को,
पूर्ण-काम कीजे।। हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति।

9

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

६. प्रतिपल प्रीति बढ़े चरणों में, हो न कभी तृप्ति,
स्वामी, हो न कभी तृप्ति।
सात्विक भाव बढ़े क्षण क्षण में, सात्विक भाव बढें क्षण क्षण में;
बढ़े ज्ञान-दीप्ति।। हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति।

७. जिनके दृढ-विश्वास चरण तजि, आस नहीं दूजी,
स्वमी, आस नहीं दूजी।
निश्चय बनि अधिकारी, निश्चय बनि अधिकारी;
पावे महा-योग-पूंजी।। हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति।

८. गुरुपद-पद्म-पराग-सुअंजन, जो नयनन आंजे,
स्वामी, जो नयनन आंजे।
दिव्य-दृष्टि कर प्राप्त, दिव्य दृष्टि कर प्राप्त;
तापत्रय अर्धनिमिष भांजे।। हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति।

९. कैसे करें प्रार्थना, गुरुवर ? हम सब अज्ञानी,
स्वामी, हम सब अज्ञानी।
स्वयंसिद्ध-शुभ-साधन दीजे, स्वयंसिद्ध-शुभ-साधन दीजे;
श्री गुरु विज्ञानी।। हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति।

१०. जय दक्षिणा मूर्ति, ओं गुरु जय दक्षिणा मूर्ति।
करत अनुग्रह शिष्यवर्ग पर, करत अनुग्रह दासवर्ग पर;
फैली जग कीर्ति।। हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महा मन्त्र

१. 'उों नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार ।

२. 'उों नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार ।

३. 'उों नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार ।

४. 'उों नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार ।

५. 'उों नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार ।

६. 'उों नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार ।

७. 'उों नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार ।

८. 'उों नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार ।

९. 'उों नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार ।

१०. 'उों नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार ।

11

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्रार्थना

कठिनिस सॅदरस तार दिनॅ खॉतरॅ
सद्ग्वरॅ तोह्य छिक ज़गि मशहूर ।
अज्ञानॅ-मलॅकव नाव सॉन्य गीरॅमॅच़,
ज़गद्ग्वरॅ, सॉन्य नाव तार सॉ अपोर ।।

कठिनिस सॅदरस तार दिनॅ खॉतरॅ
टाठिग्वरॅ तोह्य छिक ज़गि मशहूर ।
अज्ञानॅ-मलॅकव नाव सॉन्य गीरॅमॅच़,
ज़गद्ग्वरॅ, सॉन्य नाव तार सॉ अपोर ।।

कठिनिस सॅदरस तार दिनॅ खॉतरॅ
सानिग्वरॅ तोह्य छिक ज़गि मशहूर ।
अज्ञानॅ-मलॅकव नाव सॉन्य गीरॅमॅच़,
ज़गद्ग्वरॅ, सॉन्य नाव तार सॉ अपोर ।।

बोल सद्गुरु महाराज की जय ।
बोल जगद्गुरु भगवान गोपीनाथ महाराज की जय ।
बोल सांचे दरबार की जय ।
ओं नमः पार्वती-पतये!
हर! हर! महादेव!

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

समापन

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि विश्वम्।।

सर्वमङ्गल माङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके! शरण्ये! त्रयम्बके! गौरि! नारायणी! नमोऽस्तु ते।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि! नारायणि नमोऽस्तु ते।।

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी।
शक्तिः शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी हींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि।।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्। सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं द्वंद्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं सदगुरुं तं नमामि।।

आवाहनं न जानामि नैव जानामि पूजनं पूजापाठं न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर।।

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसोरुसा वचसा मनसा च नम्सकारं करोमि नमः।।

असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय।

ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः भद्रं पश्येम-अक्षिभिः-यजत्राः।।
स्थिरैः-अङ्गैः-तुष्टवाँसः-तनूभिः व्यशेम देवहितं यदायुः।।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरष्टिनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुं शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापाः शान्तिरोषधयः शान्तिःवनस्पतयः
शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वगुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

ओं शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः!

13

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भजन

बजर पादन हन्ज़ि गर्दि हुन्द कॅम्य अॅक्य न ज़ोनुय?
अजर-अमर भगवान बब छुख आसॅवोनुय।
हजर अछरन हुन्द कर्मस छुख कासॅवोनुय
अजर-अमर भगवान बब छुख ऑसवोनुय।।

दया सागरॅ, ही दयालो, यिखना वन्ये
पादन चान्यन हॅन्ज़ कृपा ध्यवॅ असिति बन्ये,
छुय च़्यय प्रणाम बारम्बार पादन सोनुय।। अजर ०

हे गोपीनाथॅ ! लोलॅसान पोश लागोय शेरे
भावॅ-नागॅरादस प्रेमॅ चान्युक अमृत फेरे,
दॅय च़लि मनस, च़ॅय सन्मोख छुख भासॅवोनुय।। अजर ०

दिच़ॅथ च़्य मान्यता यूग-दृष्टि सूॅत्य संतन तॅ साधन
प्राणॅ-अपानॅच ज़ान करॅनाव, गोश थाव नादन,
पानन सान्यन लोलॅ अमर्यथ न्यथ दितॅ चोनुय।। अजर ०

बब सोन च़ॅय छुख, लोलॅ खास्यन फिर असि क्युत मोय,
तशनॅलब यच़ॅ छिय; गुल्य गन्डिथ असि करान च़यय कुन जय।
शब रोज़ ज़डन त ज़ीवन मन्ज़ छुख भासॅवोनुय।। अजर ०

दीनन अनाथन वन्य बबा कॅह छ़ा च़ॅय यार,
आमॅत्य शरण च़्येय, पादि-कमलन तल छिय वनान ज़ार।
सीनन सान्यन प्यठ यि ओमकार गछ़ि खनोनुय।। अजर ०

पय लोग चोनुय; छय च़्य वैकुण्ठॅ-पद्वी प्यठ जाय
लय असि च़्यय सूॅत्य छय गॉमच़, कर सोन वोपाय,
दय छुख निराकार; ऑरॅत्यन छुय आसरॅ चोनुय।। अजर ०

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

नाव सॉन्य यीरान छय कठिनिस दोखॅ सागॅरस मंज़,
अथ बाल लागॅनॅच, हॉन्ज़ बनिथ कर पानय संज़,
आवॅलॅनिसॅय मज़ अॅस्य ति दामानॅ रटिथ छि चोनुय।। अजर ०

शॅष्य चॉन्य कूॅत्यन देशन मंज़ ग्वण छिय ग्यवान,
मशहॅख किथॅ पॉठ्य ख्यनॅ-ख्यनय याद छुहख प्यवान,
कश्मीरॅ मंडॅलस मंज़ खरॅयार आश्रम छु चोनुय।। अजर ०

ही, व्यनॅ, ग्वलाब, ब्यल तॅ मादल पूज़ायि लागोय,
रूह सोन छु च्यॅय सूॅत्य आश्रमॅसॅय मंज़ अॅस्य ति ज़ागोय,
द्रॅय चानि खावि हुॅन्ज़ छि, लोल हमान छुनॅ असि चोनुय।। अजर ०

यिम न्यत्रॅ कमल चॉन्य पंपोश ही शूभायमान;
यिम दृष्टि सूॅती, भॅक्त्यन छिय दिल चूरि निवान;
दिम तिछ़ म्य शक्ती युथ मनस मंज़ बन्यम वास चोनुय।। अजर ०

'देवान मसरुर' गीथ चॉनी बॅ लेखान रोज़य
सरखम करिथॅय, पादन तल प्रणाम सोज़य,
वर्णन ग्वन चॉनि करॅ कलॅमस दपॅ लेखोनुय।। अजर ०

बजर पादन हन्ज़ि गर्दि हुन्द कम्य अॅक्य न ज़ोनुय?
अजर-अमर भगवान बब छुख आसॅवोनुय।
हजर अछरन हुन्द कर्मस छुख कासॅवोनुय
अजर-अमर भगवान बब छुख ऑसवोनुय।।

—द्वारिका नाथ 'मसरूर'

15

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ग्वरॅ-लीला

ग्वरॅ-दीवॅ लगॅयो म्य छि चॉन्य लादन,
पादन वन्दयो मन तय प्राण।
चॅय म्योन नख-डोख चय तरण-तारण,
पादन वन्दयो मन तय प्राण।।

कर स्वीकार म्यॉन्य भावॅक्य पम्पोश,
फोलनस आय यिम, चोनुय छु जोश।
होश दिथ म्य पनॅनुय युथ नो ब रावन।। पादन ०

सत्ग्वरॅ च़ आसवुन त्रिभुवनॅसारय,
चॅय मोलमॉज म्योन ज़ॉञकारय।
करतम म्य वादॅ पूर; कन थव म्य नादन।। पादन ०

ग़ट चॅय म्य कासतम, मत दॅशिरावतम,
करतम लटॅलठ तॅ इतॅगछ् दूर।
पनॅञे कृपायि सॅूत्य च़ठ म्य क्रूड़ॅ-ज़ालन।। पादन ०

प्योमुत पथर छुस वति प्यठ अनज़ान,
करॅ क्याह च़्यॅय रोस्त ? वथ म्य हावतम।
यीतनय च़्ये आर, म्योन; पिल कोत बॅ खातन? पादन ०

पुशिरोवमुत म्य पान चान्यन च़रणन,
कासतम् कालॅहान, दिथ पनॅञ ज़ान।
दूर मतॅ त्रावतम वोंञ कुनि सातन।। पादन ०

विद्याधन छुख ज्ञानुक भण्डार,
निर्-अक्षर छुस बॅ दिम पनुन प्रसाद।
सॅूत्य सॅूत्य रोज़्तम विज़ विज़ि सातन।। पादन ०

नाव चोन वनॅ क्याह? लछिनोव चॅय छुख,
शुर्य तॅ बॉच़ छिय वनान भगवान्जी।
'पेशिमोत' मनॅ मॅंज़्य ग्वरॅवाक्य पालन।। पादन ०

— पुष्करनाथ कौल, ''पोशिमोंत''

16

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

युस यूगीश्वर यूग ओस सादन

युस यूगीश्वर यूग ओस सादन,
पादन तॅम्य सॅन्द्यन छु सोनुय प्रणाम।
सुय सत्ग्वर सोन असि थवि लादन;
पादन बब सॅन्द्यन छु सोनुय प्रणाम।।

शरणॅय आय अॅस्य तसॅन्द्यन च़रॅणन;
वर्णण कुस करि तॅम्य सॅन्द्य ग्वण?
वरबुकॅ आमॅत्य छि बोज़ि फर्यादन।। पादन ०

दून्या ब्रोठॅ कनि बस शोलॅ मारान,
दारान ओसुय सु शिवॅ सुन्द रुप।
पूरण करॅवुन छु सान्यन वादन।। पादन ०

सु कल्याणॅ-कॉरी भगवान बब सोन,
नुन्दॅ-बोन आसॅनस प्यठ शूबान।
भक्ति-भावॅ भक्तयन दिवान आहलादन।। पादन ०

च़रॅणन हॅन्ज़ि खावि हॅन्ज़ गर्द छानेयि,
स्वय बनेयि सान्यन दाद्यन दवा।
स्वय गर्द नाश छय करान अपॅराधन।। पादन ०

गोपीनाथ - योगीश्वरॅ - सन्तस,
छस माला फिरनस सूॅत्य लय।
जयकार बारम्बार छुस समाधन।। पादन ०

द्वखॅ-सागरस मंज़ छिय अॅस्य पेमॅत्य,
गॉमत्य असि सारिनॅय मॅलित मन।
आरॅ-बर्यत्यन असि कन थवि नादन।। पादन ०

दासॅ-भावॅ किन्य अॅस्य कलॅ नोमॅरॉविथ,
त्रॉविथ पादन तल बबस पान।
वास करि मनि मंज़ असि स्यद्यन तॅ सादन।। पादन ०

ज़्येठॅ-जूनॅ-पछि-द्वय, अरॅहॉठ ईस्वी,
तथ प्यठ सद्ग्वर सोन गव मूख्य।
भक्त्यव ओश होर ओस असि आदन।। पादन ०

17

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

सन्ताप, पाप, शाप, च़टान कटासें सूंती
ज्योति-स्वरूपस छु सोन नमस्कार।
क्षणें-क्षणें वाति सुय सान्य दाद्यन। पादन ०

सद्ग्वरें सँज़ आरॅती युस न्यथ करि,
सुय तरि यमि भव-सागरें अपोर।
प्रथ विज़ि च़टि पापन कमन तें ज़्यादन। पादन ०

आश्रम तॅम्य सॅन्द्य प्रथ जायि छि बनान,
तिम वनान सद्ग्वरें सुन्द गन्यव लोल।
'मसरुर' गुल्य गण्डिथ तिथ्यन दिलशादन। पादन ०

युस यूगीश्वर यूग ओस सादन,
पादन तॅम्य सॅन्द्यन छु सोनुय प्रणाम।
सुय सत्ग्वर सोन असि थवि लादन ;
पादन बब सॅन्द्यन छु सोनुय प्रणाम।।

— द्वारिका नाथ 'मसरूर'

च़ें शमा छुख सोन

च़ें शमा छुख सोन अॅस्य छि चॉन्य परवानें
सद्ग्वरें गोपीनाथें भगवानो।।

गरि गरि विज़ि विज़ि छिय भखॅत्य सुमरान,
घ्यान चोन मनस मंज़ दारानो।
भक्ति भावय छिय पाद चॉन्य पूज़ान।। सद्ग्वर ०

त्रॉविथ घरॅबार प्रोवुथ खलवख खान,
छ़ांडॅनि द्राख पनुन जानानो।
क्रय करिथ प्रय भरिथ लोबथन भगवान।। सद्ग्वर ०

दयि सॅन्ज़ लय थविथ पय रोटुथ शक्तिवानें,
ल्वलि मंज़ भगवान ललवानो।
मॉर्यफतुक मय चोथ पनने मयखानें।। सद्ग्वर ०

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

तपस्यायि चानि वाति कुस क्रयावान ?
ख्यनॅ चनॅ रोस्त मस्त आसानो।
पॉर्य लगोय चानि अथ मस्ती मस्तानॅ।। सद्ग्वर ०

कम कम साध सन्त कर्यथख हॅरान।
वुछिथ चोन योगॅबल छि नमानो।
दरशनॅ चानि सूॅत्य हरशस गछ़ान।। सद्ग्वर ०

सासॅ बॅद्य भक्ति-भावॅ किन्य छी यिवान,
कॅरिथ चोन दर्शुन छि तोशानो।
चानि दरशनॅ मनुक पंपोश फोलान।। सद्ग्वर ०

स्वख द्वख द्वशवै यकसान ज़ानान
मायायि सूॅत्य लय न थावानो।
रटिथ मन त्वरॅगस चॅय यूग साधान।। सद्ग्वर ०

चे़ निश सॉरी ऑस्य ग्वरॅ यकसान,
सारिनॅय समद्रष्ट वुछानो।
न कांह पनॅनुय तॅ न कांह बेगानॅ।। सद्ग्वर ०

सद्ग्वरॅ पनॅन्यन भक्तयन रछान,
सायि प्यठॅ पनॅनुय थावानो।
यी मंगान छी च़्ये ती छुहख दिवान।। सद्ग्वर ०

भक्तयन मंज़ श्रेष्ठ भक्त अख आसान,
नाव तस शंकरनाथ वनानो।
च़्येय पतॅ सद्ग्वरॅ गोमुत देवानॅ।। सद्ग्वर ०

येलि ज़ांह भक्तयन मुशकिल छु यिवान,
शरण चे़य ग्वरसॅ छि गछ़ानो।
कृपायि चानि सूॅत्य द्वख तॅ दॉद्य च़लान।। सद्ग्वर ०

भगवत्-स्वरुप छुख खरॅयारॅ भासान,
पाद चॉन्य न्यथ 'प्रेम' पूज़ानो।
भक्ति-भावॅ सद्ग्वरॅ चॉन्य ग्वण ग्यवान।। सद्ग्वर ०

चॅ शमा छुख सोन ऑस्य छि चॉन्य परवानॅ
सद्ग्वरॅ, गोपीनाथॅ, भगवानो।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

दामानॅ रटनि आय चोन दरबार

दामानॅ रटनि आय चोन दरबार, सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार।।
सत्ग्वरॅ सानि असि केंछा यार, सन्त-गोपीनाथॅ छुय नमस्कार।।

भक्तथन कोताह छुय चोन लोल! चयॅ छुख मॉज्य तय चॅय छुख मोल।
कठिने भवॅसरॅ कर असि पार।। सन्त-गोपी ०

इन्द्रचय सॉरी शोमॅरॉविथ, समॅसारॅक्य विषय तॅ भूग त्रॉविथ।
ॲन्दरिय सारिनॅय कोरुथ संहार।। सन्त-गोपी ०

संसार निशि रूदुख च़ निर्मल, यिथॅ पॉठ्य ख्यलॅ-वथॅरस प्यठ ज़ल।
ज़लॅनिशि होख ख्यल गव इज़हार।। सन्त-गोपी ०

रोशन सोरुय छुय सोन् हाल, वोलमुत छु गृहस्थॅक्य सर्पन नाल।
पोशव कति कुनि छुॅन म्वकॅजार।। सन्त-गोपी ०

आयॅ ॲस्य शरण कमि लोलॅ माये, बबॅ सानि असि प्यठ थव च़ साये।
आशावान छि ॲस्य असि दितॅ तार।। सन्त-गोपी ०

भखॅत्य चॉन्य प्रथ कुनि देशस मज़, चानि पूज़ायि हुन्द करान छिय संज़।
प्रथ जायि चान्यन ग्वणन हुन्द प्रचार।। सन्त-गोपी ०

पादव तलॅ योसॅ गर्द द्राये, औषधी सोय छि सानि कायाये।
च़लि दोद-दग ब्ययि बलि बेमार।। सन्त-गोपी ०

दीवान ''मसरूर'' करान गिरिया, सत्ग्वॅर नन्य वोन्य हाव बारगाह।
त्युथ करनाव युथ बनि उद्धार।। सन्त-गोपी ०

दामानॅ रटनि आय चोन दरबार, सन्त गोपीनाथॅ छुय नमस्कार।।
सत्ग्वरॅ सानि असि केंछा यार, सन्त-गोपीनाथॅ छुय नमस्कार।।

— द्वारिका नाथ 'मसरूर'

20

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

''सथ ग्वरॅ छम म्य चॉन्य लादनय''

नेत्रॅ ज़लॅ गोड़ॅ दिमयो, यूगीश्वरो, सद्ग्वरो छम म्य चान्य लादॅनॅय।
गोपीनाथ ग्वॅर सानि, कास अरॅसरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।।

आदि प्रभातस स्वरॅनावतम ग्वरॅ, सोन्दरो अठकल वति लागतम।
नत हर्द ब्रोंठॅय गुल, बो गछ़ बरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।

चानि यछ़ायि तय अनुग्रह गछ़ॅ खरो, ग्वरॅ-वरो दर्शनॅ बलनम दॉद्य।
कर कृपा नाव चोन युथ, क्षण-क्षण स्वरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।

ही संतॅ मस्तमलंगॅ सादॅ कलंदरो, स्वन्दरो पादन तल दितम जाय।
चोनुय आश्रम छुम, म्य पजॅरुक गरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।

स्मरनि चानि सीवक तरन भवसरो, अमरो करतॅ असि पननुय वोपाय।
तिछ़ दया करतॅ युथ च़लि, लान्युन वरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।

अकि दया दृष्टियि कास वर-हजरो, स्यज़रो शोज़ॅरूक दितॅ असि ज्ञान।
द्वॅय च़लि ब्यन गलि, हिशर त कुन्यरो; सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।

पननि तॅ परद्युक अनिग्वोट वॉन्य हरो, ईश्वरो संसॉर्य ज़ाल च़ठतम।
अदॅ द्यवॅ शोधि मनॅ, चॉन्य पूज़ा करो; सतग्वरॅ छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।

दस्त-बस्त 'सायिल' आमुत बर दरो, ग्वरॅ हरो हावतम आत्मॅ-प्रकाश।
म्वकलाव कष्टॅ मंज़ॅ वन्य, कोताह बेयि ज़रो? सद्ग्वरो छम म्य चॉन्य लादॅनॅय।।

—पृथ्वीनाथ कौल ''सायिल''

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ग्वर वंदना

ग्वरें पम्पोशि-पाद मनि ललॅनावय, भावय त बोज़तम बबें फ़र्याद,
चानि वेरि मनें-मंदरें आसन थावय, भावय त बोज़तम बबें फ़र्याद।

अशिवानि चरणें-कमल चॉन्य नावय, ज्ञानें-गंगायि मंज़ कड़ॅहख ग्राय।
यूगॅके अंगोचि पाद वथॅरावय; भावय त बोज़तम बबें फ़र्याद।

ही तपॅ रेषि सानि जफ़ करॅनावय, चानि दोनि हन्दि भस्म चलि संताप,
शोभें दर्शनें मनें पोश फोलॅनावय; भावय त बोज़तम बबें फ़र्याद।

ही यूगी संतें, शांत-स्वभावय, सम दृष्टि चानि कस नें म्यूल फल?
कुस सना चानि आश्रमें छ़ोर द्रावय? भावय त बोज़तम बबें फ़र्याद।

खरॅयारें भगवान गोपीनाथ हावय, भक्त्यन छुय करान तति कल्याण।
तॅथ्य ग्वरें-पीठस जूल करॅनावय; भावय त बोज़तम बबें फ़र्याद।

त्यॉगी ग्वर सोन मस्तय द्रावय; क्षणें-क्षणें ओस सुय माला फिरान।
चिलिमि हुंन्ज़ि जोति सूंत्य छ़ाय चलॅनावय; भावय त बोज़तम बबें फ़र्याद।।

ग्वरें दितें भक्ती असि अनज़ानन, अदें यियि अनिनॅय न्यॅतॅरन गाश।
पतें द्यव ग्वरें-गीता परॅनावय; भावय त बोज़तम बबें फ़र्याद।

संतोषि-भूमिकायि सथ ववॅनावय, कर्म वुद्यूग बो दिमें तथ सग।
धर्मचि यछ़ि पछ़ि न्यन्दें करॅनावय; भावय त बोज़तम बर्ब फ़र्याद।

श्रद्धायि सूंत्य बो ग्वड बरनावय; च्यथ व्यमर्शि कर तथ पानें चॅरि रॉछ।
वॉरागें द्राति पॅत हामें लोनॅनावय; भावय तें बोज़तम बबें फ़र्याद।

लूभ मूह छ़ल कपट मूलें च़टॅनावय; सतें के ब्यालि भवि शॉती फल।
'सायिल' एकाग्रें मनें स्वख प्रावय; भावय त बोज़तम बबें फ़र्याद।।

—पृथ्वीनाथ कौल ''सायिल''

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ग्वरॅ अस्तुती

भगवान जी म्यानि लगयो पादन, नादन म्यान्यन थावतम गोश।
मनि मंज़ हनि हनि छम चॉन्य लादन, नादन म्यान्यन थावतम गोश।।०।।

सारिनॅय थज़ॅरस चोनुय आसन, गटि मंज गाशुक आगुर च़ॅय।
रछिवुन हरदम सेद्यन त सादन; नादन म्यान्यन थावतम गोश।।

लछि नावि ग्वरॅ दीवॅ मुह गटॅ कासतम, करतम सॉरॅय अनिगटॅ दूर।
दंड़ॅवथ शरन छुस पम्पोशि पादन; नादन म्यान्यन थावतम गोश।।

वस्तर नॉल्य छिय रंबॅवॅन्य ज़रकॉर्य, नॉल्य छय खॉल्य मालॅ शेरि दसतार।
भय दूर करॅवुन छुख सातॅ सातन; नादन म्यान्यन थावतम गोश।।

ही गोपीनाथॅ टाठि सानि रक्षपालॅ, हरदम रोज़तम च़ॅय सनिदान।
पूज़ॅहथ सातॅ सातॅ सुबहन तॅ शामन; नादन म्यान्यन थावतम गोश।।

आश्रम चोन छुय कृपायि हुंद दार, येति भक्तयन छुय बनान शेहजार।
पापन क्षमा बेयि म्वक्ती दासन; नादन म्यान्यन थावतम गोश।।

बे-अन्त अगोचर ब्रह्मा विष्णु, परिपूरण छुख च़ॅय सदाशिव।
ऑरच़र कासन भक्तयन पालन; नादन म्यान्यन थावतम गोश।।

डालि पोश अॅन्यमय सॉरी लागय, दानॅ दानॅ ब्यल तय ब्येयि मादल।
'पोशिमोत' दास चोन ड़ेड़ि तल प्रारन; नादन म्यान्यन थावतम गोश।।

—पुष्कर नाथ 'पोशिमोत'

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ग्वरुॅ दीवुॅ वरतम द्वन पादन तल

ग्वरुॅ दीवुॅ वरतम द्वन पादन तल, कल छम चाऽनी हावतम गाश।
दकुॅ लद दकुॅ ख्यथ आमुत बर तल, कल छम चाऽनी हावतम गाश।।

लूसिथ प्योमुत यितुॅ गछ़ कऽर्य कऽर्य, छ़ऽर्य अथु ह्यथ छुस कति लगि तार।
म्वक्ति दिुनुची कड़तम काहँ हल, कल छ़म चाऽनी हावतम गाश।।

वनुॅ क्याह मंगुॅ क्याह,केंह छनुॅ खबुरुॅय, ज़बुॅरुॅय यी गछ़ि तऽथ्य कुन लाग।
यी गछ़ि आसुन ती दिम जल जल, कल चाऽनी छ़म हावतम गाश।।

पऽछ़्य लाज़ि आसुन कति छुम बासान, रंगुॅ रवकुय छुस थ्यकुनावान।
असार सम्सार डलुॅ मंजुॅकुय ख्यल, कल छ़म चाऽनी हावतम गाश।।

माया ज़ालन गीर छुस को'रमुत, प्योमुत छुस ज़न लूसिथ व्वन्य।
तमि कलि कड़तम यो'सुॅ छ़म परकल, कल छ़म चाऽनी हावतम गाश।।

छ़ल तुॅ कपट अज़ताम वरतोवुम, ख्योवुम मन अज़तामथ वे'ह।
मल गाऽलिथ मन करतम न्यरमल, कल छ़म चाऽनी हावतम गाश।।

वति डो'लमुत छुस पज़ि वति लागुम, हावुम ज्ञानुक यूगुक गाश।
स्वन करतम ह्यो'रि ब्वन छुस सरतल, कल छ़म चाऽनी हावतम गाश।।

बब सोन चुॅय छुख़ असि छुनुॅ काँह गम, नम रठ सानि नावि अदुॅ लगि तार।
''नाज़स'' कास ज़न्मन हुन्ज़ ग्राँन्गल, कल छ़म चाऽनी हावतम गाश।।

— मोतीलाल कौल 'नाज़'

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com